B.A. II Hons III paper

1.

गान्धार कला (Gandhara Art)

गान्धार क्षेत्र :- गान्धार, यह भौगोलिक नाम ऋग्वेद में आता है। वहाँ गान्धारि का अर्थ है - गान्धार के निवासी और विशेषतः गान्धार के मोटे ऊन वाली भेड़ का उल्लेख किया गया है। अथर्ववेद में भी नाम का यही रूप दोहराया गया है ऐतरेय और शतपथ ब्राह्मणों में "गान्धार" नाम है, गान्धार कला सम्बन्धी सात स्थानों से इस कला के मूल्यवान अवशेष पाये गए हैं। इसके सात केन्द्र इस प्रकार से। 1. तक्षशिला 2. पुष्कलावती 3. नगरहार 4. स्वात घाटी या उड्डीयान 5. कपिशा 6. बामियाँ 7. बाह्लीक या बैक्ट्रिया।

तक्षशिला कला-केन्द्र :- तक्षशिला का नाम तक्षशिला भी है, यह सिंधु से पूर्व गान्धार की राजधानी, कला का प्रधान केन्द्र और व्यापार की बड़ी मण्डी थी। गान्धार देश की महती शिल्पकला का केन्द्र यहीं था, जहाँ ~~हमारी~~ हमारी मूर्तियाँ सिलेटी रंग के परतदार पत्थर की बनाई गई है। तक्षशिला में कला के तीन स्थान मिले हैं जो कालक्रम से अस्तित्व में आये हुए तीन नगर थे - भीर, सिरकप और सिरसुख।

तक्षशिला के पड़ोस में मोहरा, मोरादु, पिप्पल और जौलियाँ के अवशेष भी मिले हैं। जौलियाँ के अवशेष सबसे ~~पूर्ण~~ सुरक्षित और प्रभावशाली हैं मोहरा मोरादु में एक विहार और कई स्तूप मिले हैं। तक्षशिला में सबसे महत्वपूर्ण अवशेष धर्मराजिका या चीर स्तूप है। यह स्तूप आकृति में गोल है और एक ऊँची मेधि पर बनी है। तक्षशिला के आस-पास का पूरा पहाड़ी अवशेषों से भरा है।

पुष्कलावती :

उसी पठान मार्ग पर शाहबाजगढ़ी, होती मर्दान और पुष्कलावती (आधुनिक चारसद्दा) नामक स्थान थे। कालिदास ने तक्षशिला और पुष्कलावती को गंधर्व देश या गान्धार की दो राजधानियाँ कहा है जो सिन्धु नदी के पूर्व और पश्चिम में थी। यहाँ के निवासी गुप्त युग में गन्धर्व नाम से प्रसिद्ध थे। इस स्थान को हस्तनगर भी कहते हैं। जहाँ हारीती का एक बड़ा मन्दिर है। समीप में ही बालाहिसार स्थान में कुणाल स्तूप मिला है जहाँ अशोकपुत्र कुणाल ने चक्षुदान किया था। श्वीपूमो ने उसकी पहचान की थी।

जहाँ से बुद्ध मूर्तियों का एक भण्डार ही मिला है, जो से बुद्ध, बोधिसत्व, बुद्ध के जीवन के दृश्य, जन्म-मरण, संबोधि, धर्मचक्रपरिवर्तन इत्यादि मूर्तियाँ मूलभूत स्थान पर पाई गई हैं। उस समय गन्धार शैली की कला पूरे उत्थान पर थी उनमें से कुछ मूर्तियों में क्लास के लक्षण भी प्रगट हैं। इसमें पत्थर की मूर्तियाँ चूने या गचकारी की मूर्तियों से अधिक पुरानी हैं।

चारसद्दा के दक्षिण काबुल नदी के इस पार शाह-जी-की-ढेरी नामक स्थान पर कनिष्क द्वारा निर्मित महास्तूप के अवशेष प्राप्त हुए हैं। उसके धातुगर्भ सोने का पानी चढ़ाई हुई एक ताम्र मंजूषा मिली है जो दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

3. **नगरहार केन्द्र:** पेशावर से पश्चिम उत्तरपथ नामक प्रधान मार्ग पर नगरहार नाम का स्थान था (वर्तमान जलालाबाद) जहाँ बीमरान स्तूप के भीतर एक सोने की मंजूषा मिली थी। वह सेलखड़ी के एक पात्र में रखी हुई थी जो प्रथम सदी ईसवी का है। यहाँ सबसे महत्वपूर्ण स्थान हड्डा था जहाँ गन्धार कला की पत्थर और गचकारी की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। जिन पर यूनानी शैली का प्रभाव स्पष्ट है।

4. **सुवास्तु या उड्डीयान केन्द्र:-** स्वात घाटी के अन्तर्गत उपमाउ प्रदेश में अशोक के समय से ही बौद्ध धर्म जड़ पकड़ चुका था जिसका प्रमाण शाहबाजगढ़ी में उसके प्रस्तर-लेख हैं। उड्डीयान क्षेत्र की स्थिति उन भौगोलिक मार्गों के किनारे पर थी जो सिंधु प्रदेश के एक ओर लघमान (लम्पाक) और दूसरी तरफ चित्राल के द्वारा मध्य एशिया से जोड़ते थे। श्री ऑरेल स्टाइन को निचली स्वात घाटी में कई स्थानों पर बौद्ध स्तूपों के खंडहर मिले थे पर गंधार शैली के प्रभूत उदाहरण इटली के पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा इस क्षेत्र में बुतकरा, अदेग्राम, सैदू शरीफ, गुम्बत आदि स्थानों पर की गई देर की खुदाई से प्राप्त हुई हैं। स्लेटी रंग के पत्थर या शीस्ट के फलकों पर बुद्ध, उनकी जीवन-दृश्यावली, संबंधित कथानकों के दृश्य तथा विविध जातक-कथाओं का अंकन है। एक विशेष फलक पर पद्मासन में बैठे बुद्ध के दोनों ओर खड़े इन्द्र तथा ब्रह्मा उनसे धर्म-व्याख्यान की प्रार्थना करते दिखाए गए हैं। एक फलक पर त्रिरत्नावलि से सज्जित ऐसा विशाल

Scanned with CamScanner

त्रिमेधि स्तूप अंकित है जिसमें भूमि से ऊपर प्रदक्षिणा पथ तक पहुँचाने वाली ऊँची सीढ़ी बनी है।

5. कपिशा केन्द्र: उत्तरापथ पर दूसरा महत्वपूर्ण स्थान कपिशा था गन्धार और बाह्लीक के पहाड़ी दर्रों की रक्षा करता था। पाणिनी ने पाँचवी सदी ईसवीपूर्व उसका उल्लेख किया है। और कौटिल्य ने भी वहाँ के कापिशायन मधु का वर्णन किया है। इस स्थान पर बहुत से दन्त फलक मिले हैं जो किसी समय शृंगार-पेटियों या रत्न-मञ्जूषाओं के अंग थे। यहाँ की प्राप्त कला सामग्री पर एक और भारतीय और दूसरी ओर यूनानी शैली का प्रभाव स्पष्ट है।

कापिशा के पूर्व और पश्चिम के कलाप्रभावों से अत्यधिक सुन्दर शैली का जन्म हुआ। यहाँ शीशे के बने हुए बहुत से रंगीन पानपात्र भी मिले हैं जो रोम देश से लाए गये थे। छोटी-बड़ी सुराहियाँ या मधुपात्र, तिकोना प्याला, जिसपर जियस का गरुड़ गैनीमेडी को तथा एक वृषभ यूरोपा को उठाए लिए जाता है। यह सूर्यपूजा का महान युग था जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। उस समय के अनेक सूर्य मन्दिर भी मिले हैं। हाकिन का कहना है कि खैरखाना के सूर्य मन्दिर में वास्तु और मूर्ति शिल्प के बहुत से लक्षण पाए गए हैं जिसकी तुलना भूमरा के गुप्तकालीन शैव मन्दिर से की जा सकती है।

6. बामियाँ कला केन्द्र: उत्तरपथ पर और पश्चिम की ओर पर बढ़ते हुए बामियाँ घाटी और फोन्दुकिस्तान के प्राचीन अवशेष मिलते हैं। बामियाँ में पहाड़ को काटकर दो बावनगजा बुद्ध मूर्तियाँ बनाई गई हैं थी जिनमें से एक 114 फुट और दूसरा 173 फुट ऊँची है। इनके पृष्ठ भाग में और दोनों ओर अनेक गुफाएँ हैं जिनमें अजन्ता जैसे भित्ति चित्र बने हैं। सुप्रसिद्ध धार्मिक आचार्य मानी ने चित्रकला की शिक्षा बामियों से प्राप्त की थी। बामियाँ की पर्वत घाटी उस युग में भारत का देहलीद्वार था। चीन, मध्य एशिया, ईरान और रोम से आने वाले धर्म यात्रियों को भारत के दिव्य स्वरूप का दर्शन के लिए बुद्ध मूर्तियों और अन्य गुफा का निर्माण किया गया था।

7. बाह्लीक नगर:- अफगानिस्तान और तुर्किस्तान के मध्य बिंदु पर वंक्षु का तटवर्ती महानगर बाह्लीक था जो व्यापार धर्म, संस्कृति का बहुत बड़ा केन्द्र था। बाह्लायन प्रदेश में जो खुदाई हुई है उससे ज्ञात होता है कि यह

Scanned with CamScanner

यह कला और संस्कृति का महापात्र था। बाल्हीक में एक तक भारतीय कला शैली के अवशेषों का अभाव है वैसे वहाँ नवविहार नामक एक अवशेष मिला है जो निःसन्देह बौद्ध है और कुषाण शासक वासुदेव के समय का है। कुन्दुज यूनानी बौद्धकला का मुख्य केन्द्र था जहाँ जंडियाल के मंदिर से मिलता-जुलता है। इसी कारण फूशे ने अनुमान किया है कि कुन्दुज से तक्षशिला तक का प्रदेश गन्धार कला का जन्मभूमि था।

भारतीय कला के इतिहास में गन्धारकला के तिथिक्रम, विषय और शैली का बहुत महत्व है। इस कला को केवल चार शतियों पर वर्ष किया हुआ है। गन्धार शैली से संबंधित ~~सबसे~~ महत्वपूर्ण प्रश्न बुद्ध मूर्ति के प्रथम जन्म का है। कई पश्चिमी विद्वान बुद्धमूर्ति के प्रथम निर्माण का श्रेय गन्धार कला को देते रहे हैं। उनके मतानुसार यूनानी कला के प्रभाव से गंधार शिल्पियों ने पहले-पहल बुद्ध-प्रतिमा का 'आविष्कार' किया।

प्रतिमाशास्त्र की दृष्टि से गन्धारकला की ये विशेषताएं हैं - बुद्ध के जीवन की घटनाएं, बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियाँ, जातक कथाएं, यूनानी देवी-देवताओं और गाथाओं के दृश्य, भारतीय देवता और वास्तु शिल्प का अलंकरण है। गन्धार कला में बुद्ध के जीवन-घटनाओं के शिलापट्ट अत्यधिक हैं।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AIHAS
Shershah College Sasaram.

Scanned with CamScanner